पाठ - 15

हिंदी कक्षा सातवीं (नीलकंठ रेखाचित्र)

प्र01
उ0 नीलाभ ग्रीवा अर्थात नीली गर्दन के कारण मोर का नाम नीलकंठ रखा गया और मोरनी सदा उसकी छाया के समान उसके साथ रहती थी। इस कारण उसका नाम राधा रखा गया।

प्र02
उ0 दोनों नवांगतुकों ने पहले से ही उस घर में रहने वाले लोगों में उस प्रकार का कौतूहल जगाया जैसे नववधू के आगमन पर परिवार में उत्सुकता और प्रसन्नता होती है। लक्का कबूतर नाचना छोड़ उनके चारों ओर घूम-घूम कर गुटरगूं-गुटरगूं की रागिनी अलापने लगे, बड़े खरगोश सभ्य सभापदों के समान क्रम में बैठ कर उनका निरिक्षण करने लगे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछलकूद मचाने लगे, तोते एक आँख बंद करके उनका परिक्षण करने लगे।

प्र03
उ0 नीलकंठ देखने में बहुत सुंदर था वैसे तो उसकी हर चेष्ठा ही अपने-आप में आकर्षक थी लेकिन लेखिका को निम्न चेष्टाएं अत्याधिक भाती थी।

1. मेघों के गर्जन की ताल पर उसका इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर तन्मय होकर नृत्य करना।
2. लेखिका के हाथों से हौले-हौले चने उठाकर खाते समय उसकी चेष्टाएँ हँसी और विस्मय उत्पन्न करती थी।

प्र० 4
उ० इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कुब्जा मोरनी के आने के कारण बज उठा।
एक दिन महादेवी वर्मा "नसाखकोने" से निकली तो बड़े मियाँ ने उन्हें एक मोरनी के बारे में बताया ~~था है।~~ जिसका पाँव घायल था। लेखिका उसे अपने घर ले आती है और उसकी देखभाल करती है। वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो जाती है उसका नाम कुब्जा रखा जाता है। वह मेल-मिलाप वाली नहीं थी। इसी कारण वह राधा और नीलकंठ को एक साथ - न देख पाती थी। जब भी उन्हें साथ देखती तो राधा को नोंच डालती। वह स्वयं नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी। एक बार उसने राधा के अंडे भी तोड़ डाले।
इसी कोलाहल व राधा की दूरी ने नीलकंठ को अप्रसन्न कर दिया जो अंत में उसकी मृत्यु का कारण बना।

प्र०5
उ० नीलकंठ को फलों के वृक्षों से भी अधिक पुष्पित व पल्लवित वृक्ष भाते थे। इसीलिए जब बसंत में आम के वृक्ष मंजरियों से लद जाते और अशोक का पेड़ लाल पत्तों से ढक जाता तो नीलकंठ के जालीघर में रहना असहनीय हो जाता तब उसे जालीघर से बाहर छोड़ देना पड़ता।

प्र०6
उ० जालीघर में रहने वाले सभी जीव-जंतु एक-दूसरे से मित्रता का व्यवहार करते थे। खरगोश, तोते, मोर, मोरनी सभी मिल जुलकर रहते थे। कुब्जा का व्यवहार उनके जैसा नहीं था। वह ईर्ष्यालु स्वभाव के कारण सबसे झगड़ती थी। अपनी चोंच से नीलकंठ का घायल करती है। वह नीलकंठ पत्नी के पास आने वाले पक्षी को भी घायल कर देती है।

इसी ईर्ष्यावश उसने राधा के अंडे भी तोड़ दिए।
इसी स्वभाव के कारण वह किसी की मित्र नहीं बनी।

प्र० 7
उ० एक बार एक साँप पशुओं के जालीघर के भीतर आ गया सब जीव-जंतु इधर-उधर भागकर छिप गए, परन्तु एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। साँप ने उसे निगलने के लिए उसका आधा पिछला शरीर मुँह में दबा लिया। नन्हा खरगोश धीरे-धीरे चीं-चीं कर रहा था। तभी नीलकंठ नींद से उठ गया और साँप पर प्रहार किया। साँप अधमरा हो गया तथा उसके फन की पकड़ ढीली हो गई। खरगोश का बच्चा मुँह से निकल आया। इस प्रकार नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से बचाया।

1. नीलकंठ में सजगता व सतर्कता थी।
2. नीलकंठ साहसी था।
3. वह अपने दल की रक्षा करता है।
4. वह दयालु स्वभाव का है।